देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
JULY-SEPTEMBER 2017
Vol. 6, Issue 1
1.984

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY REFEREED RESEARCH JOURNAL

Editor
Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Web. : www.grngo.org
Impact Factor : 1.984

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October-December 2017 Page No. : 30-34

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा और अथक अध्यवसाय द्वारा हिन्दी भाषा को सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान किया। स्नेह, ममत्व, स्वाभिमान, प्रेम आदि सभी मानवीय सुकोमल भावनाओं का समावेश इन्होंने हिन्दी साहित्य जगत् में किया। इसके प्रमाण इन्होंने अपने बचपन की मीठी यादों को दोहराते हुए अपने 'आत्म संस्मरण' में इस प्रकार अंकित किया है। मेरे मुहल्ले में एक मुसलमान सबजज आ गये थे। एक दिन मेरे पिताजी खड़े उनके साथ कुछ बातचीत कर रहे थे। बीच में मैं उधर जा निकला। पिताजी ने मेरा परिचय देते हुए कहा– 'इन्हें हिन्दी का बड़ा शौक है' चट जवाब मिला– "आपको बताने की जरूरत नहीं। मैं इनकी सूरत देखते ही इस बात से वाकिफ हो गया।"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पूर्वज गोरखपुर जिले की रावती नदी के किनारे पर बसे भेड़ी नामक गाँव के निवासी थे। वंशपरंपरागत माननिष्ठा तथा पवित्रता के फलस्वरूप 'भेड़ी कबरुआ' के शुक्ल सरयूपारी ब्राह्मणों में सम्मानपूर्ण पद पर थे। जनश्रुति है कि इस वंश के तंजस्वी पूर्वजों ने किसी अत्याचारी नवाब को पराजित करके बाह्मण कन्या का उद्धार किया और शस्त्रबल से मुसलमानी रियासत को अधिकार में कर लिया था। आचार्य शुक्ल के पितामह पं.शिवदत्त शुक्ल भेडी मे ही निवास करते थे। बस्ती जिले की एक छोटी–सी रियासत नगर की रानी साहिबा शुक्लजी की दादी को अपनी कन्या के समान वही प्यार करती थी। उन्होंने पं.शिवदत्त शुक्ल के मरणोपरांत उनके परिवार के लिए अगोना (पोस्ट. कलबारी) नामक गाँव में कुछ जमीन दिला दी। रानी साहिबा के ममतावश शुक्लजी की मातामही अपने इकलौते बेटे पं. चंद्रबली शुक्ल को लेकर वही रहने लगीं। रानी के कृपा पात्र पं.चंद्रबली को योग्य शिक्षा प्राप्त हुई। फलस्वरूप उन्होंने क्वीन्स कालेजिएट स्कूल से एण्ट्रेन्स की परीक्षा पास कर ली।

उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना (प्रो.कलबारी) में ही पं रामचंद्र शुक्ल का जन्म संवत् 1941वीं की आश्विन पूर्णिमा अर्थात् 11 अक्तूबर सन् 1884 को हुआ। इनके बचपन के चार साल अगोना में बीते। अतः बालक रामचंद्र शुक्ल का प्रथम साक्षात्कार वहीं प्रदेश में बोलचाल की भाषा पूर्वी अवधी और पश्चिमी भोजपुरी से हुआ जो भाषा का संधिस्थल था। इन भाषाओं के विशेष व्याख्यानों की समीक्षा आचार्य शुक्ल ने आगे चलकर अपनी आलोचना में की है। शुक्लजी के बड़े पुत्र पं.केशवचंद्र शुक्ल का कथन है कि "इनकी माता (अर्थात् पं चंद्रबली शुक्ल का धर्मपत्नी) गाना के एक पुनीत मिश्र घराने की कन्या थी। इसी गाना के मिश्र भक्त शिरोमणि प्रातःस्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास थे।"

हिन्दी साहित्य को आचार्य रामचंद्र शुक्ल की देन :

आलोचक रामचंद्र शुक्ल : पूर्ववर्ती आलोचना–क्षेत्र कोई निश्चित रूप–रेखा प्रदान न कर सका था। शुक्लजी के क्षेत्र में भारतीय साँचे को ही बनाये रखना चाहते थे। यही नहीं, उन्होंने इस साँचे पर अटल विश्वास भी रखा था कि हिन्दी साहित्य–समीक्षा का निर्माण तथा विकास इसी के आधार पर होगा। उनकी धारणा थी कि समीक्षा का मानदण्ड राष्ट्रीय होना चाहिए। अर्थात् स्वतंत्रता के पक्षपाती भी थे।

पूर्ववर्ती आलोचक और रामचंद्र शुक्ल : आधुनिक युग के हिन्दी साहित्य में आधुनिक ढंग की आलोचना का शुभारंभ भारतेन्दु–युग में बदरीनारायण 'प्रेमघन' की समीक्षात्मक टिप्पणियों द्वारा हुआ। टिप्पणियों का प्रस्तुतीकरण प्रेमघन द्वारा सम्पादित 'आनंदकादम्बिनी' पत्रिका में होता था। इस पत्रिका के माध्यम से लाला श्रीनिवास के 'संयोगिता–स्वयंवर' नाटक की समीक्षा 'प्रेमघन' जी ने प्रकाशित की। विद्वानों का अनुमान है कि हिन्दी में आधुनिक आलोचना का सूत्रपात

Web. : www.grngo.org
Impact Factor : 1.984

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April-June 2017 Page No. : 113-116

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

कन्नड के महात्मा बसवेश्वर तथा संत गुरुनानक जी के वाणियों में अभिव्यक्त सामाजिकता

डा.जी.वी.रविशंकर

महापुरुषों के चरित्र अपने आप में महान ग्रंथ होते हैं जो कालातीत अमरत्व को स्वयं में समेट कर विश्वमानवता के लिए आदर्श स्थापित करते हैं। नानक देव की रचनाएँ गुरुग्रंथ साहब के 'महला एक' में सुरक्षित हैं। लोक वाणी में गेय होने के कारण सिक्ख समाज ही नहीं अपितु समस्त विश्व में उनका गायन किर्तन एक अद्भूत भक्ति का वातावरण उपज देता है। ठीक इसी तरह कर्नाटक के वचन साहित्य के अग्रजों में, बसव के वचन चमत्कारिक सहदयता का संचार करने के साथ बसव के हृदय की उत्कट भक्ति का सुन्दर प्रमाण बन जाते हैं। इन दो दिग्गजों का साहित्य सामाजिक दृष्टिकोण को, समाज को बदलने की ताकत रखता है। विशेष रूप से दोनों के जीवन में परम तत्व का साक्षात्कार होने और उस गूँगे के गुड वाली स्थिति का वर्णन यहाँ उल्लेखनीय है। नानक ने उसे सतनाम कहा और प्रकाश के सिंहासन पर बैठा स्वयं प्रकाश कहा हैं। बसव ने उसे विराट ब्रह्मांड से उतर कर अपनी बायी हथेली पर उतर कर बैठे ज्योति पुंज स्वरूप सान्तमान इष्टलिंग कहा और कूडल संगम देव के अभीष्ट से अपनी रचनाएँ अंकित की।

निर्गुण ब्रह्म को मानते हुए जहाँ उन्होंने ईश्वर के अद्वैत रूप को माना वहीं शक्ति की माया से उत्पन्न अज्ञान से परिपूर्ण साधक को सतमुख और भावि भी कहा है। इस द्वैत को मिटाने के लिए सतगुरु की कृपा, शिवानुभाव का प्रसाद और उत्तमोत्तम चारित्रिक गुणों के द्वारा परोपकार की भावना से निर्यासित जीवन को ईश्वर तत्व से एकाएक हो जाने की बात कही है।

तीन सौ वर्षो के अंतराल में लिखित इन रचनाओं में जो अभूत पूर्व समानता एवं एकनिष्ठता दृष्टिगोचर होती है वह विस्तृत रूप से यहाँ विश्लेषित है। उसे विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत वर्णन करने का कार्य हुआ है। निर्गुण ब्रह्म के संबंध में बसवेश्वर तथा नानक विचारों में समानता देखी जा सकती है।

बसव का निर्गुण ब्रह्म समुद्र के भीतर छिपी
सस्यों के भीतर छिपे बसे जैविक रस के स श्य हैं।
कली के भीतर छिपे सुवास की तरहय
छिपे स्नेह की तरह मादक है। वे इसको विराग हैं-
जहाँ जहों देखू वहीं तुम हो प्रभु
सृष्टि के सकल विस्तार में तुम्हारा स्वरूप है।
विश्ववतस् चक्षु तुम्हीं हो देव,
विश्वतोमुख तुम्हीं हो देव,
विश्वतोबाहु तुम्हीं हो देव,
विश्वत: पाद तुम्हीं हो देव, हे मेरे कूडल संगम देव। ।व.ष.व।532।

आपकी विशालता संसार जीवनी, आकाश जितनी, ब्रह्मांड जितनी चौडी है।
आपके श्रेष्ठ चरण पाताल की चौड़ाई नाप लेते हैं।
आपका श्री मुकुट ब्रह्मांड जितना विराट है।
अगम्य हो, अगोचर हो, अप्रतिम, मेरे शिवलिंग

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

17/2017

30-9-2017

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **डॉ. जी.वी. रविशंकर** जी का **कन्नड़ के महात्मा बसवेश्वर तथा संत गुरुनानक जी के वाणियों में अभिव्यक्त सामाजिकता** नामक शोध पत्र ''बोहल शोध मञ्जूषा'' पत्रिका के **Vol. 6- Issue-1 (जुलाई–सितम्बर 2017 अंक) के पृष्ठ 113–116** पर प्रकाशित है। जिसके प्रमाण में यह प्रमाण पत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

सिहाग

सम्पादक :

नरेश सिहाग, एडवोकेट,

एम.ए. (त्रय), एम.लिब., एम.फिल. (द्वय), एल-एल.बी. (ऑनर्स)
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता),
पत्रकारिता एवं जनसंचार विशारद, आयुर्वेद रत्न, सत्यार्थ शास्त्री
धर्माधिकारी, विद्या वाचस्पति (वैदिक साहित्य), विद्या वारिधि